भारतेन्दु हरिश्चंद्र

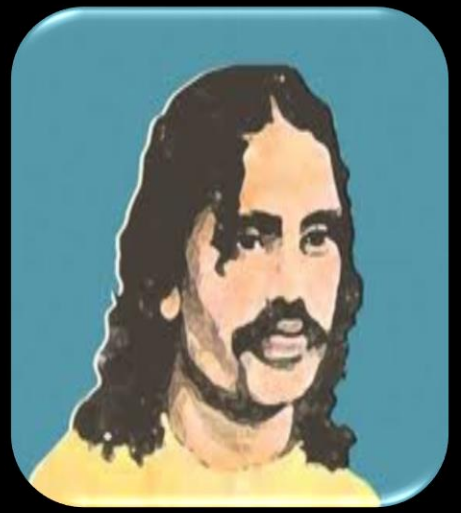

प्रेम-माधुरी

मारग प्रेम को को समुझे 'हरिचन्द' यथारथ होत यथा है।
लाभ कछू न पुकारन में बदनाम ही होन की सारी कथा है।
जानत है जिय मेरौ भली बिधि और उपाइ सबै बिरथा है।
बावरे हैं ब्रज के सिगरे मोहिं नाहक पूछत कौन बिथा है ।।1 ।।

1. उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक एवं कवि का नाम लिखिए।

उत्तर- पद्यांश का शीर्षक प्रेम माधुरी तथा कवि का नाम भारतेंदु हरिश्चंद्र है।

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-व्याख्या - प्रस्तुत पद्यांश हरिश्चंद्र जी कहते हैं कि नायिका अपनी सखी से कहती है कि प्रेम मार्ग को समझना अत्यन्त कठिन है। यह मार्ग जीवन के कटु यथार्थ की तरह ही कठोर एवं कष्टकर है। यानि प्रेम में बहुत ही कठिनाई है। वह अपनी सखी से अपनी स्थिति का वर्णन करते हुए कहती है कि इस कठिन मार्ग पर चलते हुए उसे जो कष्ट हुए हैं उसे दूसरों को सुनाने से कोई लाभ नहीं है। दूसरों को इस प्रेम-कथा को सुनाने से उसे बदनामी के अतिरिक्त कुछ भी मिलने वाला नहीं है। वह कहती है कि उसे यह अच्छी तरह से पता है कि प्रेम-व्यथा से मुक्ति पाने के सभी उपाय व्यर्थ है, इसलिए इसे चुपचाप सहते जाना ही अच्छा है। उसे ऐसा लगता है जैसे ब्रज के सारे लोग पागल हो गए हैं, सब व्यर्थ ही बार-बार उसकी प्रेम-पीड़ा के बारे में पूछते है कि उसे कष्ट क्या है? आखिर उनको हमारे प्रेम से क्या लेना देना है। उसके अनुसार प्रेम-पीड़ा किसी दूसरे के सामने प्रकट करने की चीज नहीं है।

3. बदनाम होने की सारी कथा किसे कहा गया है?

उत्तर- प्रेम को बदनाम होने की सारी कथा कहा गया है।

4. पद्यांश में ***बावरे*** शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है

उत्तर- ***बावरे*** शब्द ब्रज के लोगों के लिए प्रयुक्त हुआ है।

5. ***सिगरे*** तथा ***यथारथ*** शब्दों का अर्थ लिखिए।

उत्तर- ***सिगरे*** – सभी तथा ***यथारथ-*** यथार्थ, सत्य।

6. प्रेम को पुकारने में क्या लाभ है?

उत्तर-प्रेम को पुकारने में कोई लाभ नहीं है। क्योंकि प्रेम को पुकारने से बदनामी मिलती है। वस्तुतः कलंकक द:ख

7. काव्य सौन्दर्य :- **रस** -वियोग श्रृंगार **छंद-** सवैया **भाषा** -ब्रज **अलंकार-** रूपक, यमक और अनुप्रास।

रोकहिं जो तौ अमंगल होय औ प्रेम नसै जो कहैं पिय जाइए ।
जौ कहैं जाहु न तौ प्रभुता जौ कछू न कहें तो सनेह नसाइए ।
जो 'हरिचन्द' कहें तुमरे बिनु जीहैं न तो यह क्यों पतिआइए।
तासों पयान समै तुमरे हम का कहैं आपै हमें समझाइए । 2 ।।

1. उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक एवं कवि का नाम लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- व्याख्या हे प्रिय! यदि मैं परदेश जाते समय आपको जाने से रोकती हूं, तो अमंगल होगा, क्योंकि जाने के लिए तैयार किसी व्यक्ति को टोकना या रोकना अपशकुन कारक होता है और यदि कहती हूं कि आप अवश्य जाइए तो इसका अभिप्राय यह समझा जाएगा कि मुझे आपसे प्रेम नहीं है। हे प्रियतम ! कैसी मुश्किल

में फंस गई हूं कि न तो आप को रोक पा रही हूं और न ही आपको प्रसन्नता से विदा दे पा रही हूं, क्योंकि यदि मैं कहूं कि आप मत जाइए तो इसे अन्यथा समझकर लोग यही कहेंगे कि मैं अपने पति पर स्वामित्व (प्रभुता) दिखा रही हूं जिससे आपके सम्मान को ठेस लगेगी और यह सब सोचकर यदि चुप रहती हूं तो प्रेम नष्ट हो सकता है अर्थात् आपको चुपचाप चला जाने देने की स्थिति में भी मैं नहीं हूं। भारतेन्दुजी कहते हैं कि नायिका प्रियतम से कहने लगी कि आपके परदेश गमन पर यदि मैं कहूं कि तुम्हारे बिना जीवित नहीं रहूंगी तो भला आप क्यों विश्वास करेंगे? इसलिए यह तो कहना ही व्यर्थ है, अतः आपके परदेश गमन के लिए प्रस्थान करते समय मैं आपसे क्या कहूं, यह आप ही मुझे समझा दें। मेरी तो बुद्धि भ्रमित हो गई है और मैं नहीं सोच पा रही हूं कि क्या कहना उचित होगा ?

3. नायिका द्वारा जगत की किस रीति का वर्णन किया गया है?

उत्तर- जगत की यह रीत है की यात्रा हेतु प्रस्थान करने वाले व्यक्ति को रोकने टोकने से उसका अमंगल होता है।

4. पद्यांश में नायिका की किस मनोदशा का उल्लेख है?

उत्तर- पद्यांश में नायिका की असमंजस एवं दुविधापूर्ण मानसिक स्थिति का वर्णन किया गया है। नायिका का पति परदेश जा रहा है और वह इस असमंजस की स्थिति में है कि किस प्रकार विदेश जाते हुए अपने पति को अपने मनोभावों से अवगत कराए।

5. उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर- अनुप्रास अलंकार।

6. *पतिआइए* तथा *पयान* शब्दों का अर्थ लिखिए।

उत्तर- *पतिआइए* – विश्वास, *पयान* - प्रस्थान

7. कव्य-सौन्दर्य - रस -श्रृंगार छंद -सवैया भाषा -ब्रज अलंकार -अनुप्रास।

आजु लौं जौ न मिले तौ कहा हम तो तुमरे सब भाँति कहावैं ।
मेरौ उराहनो है कछु नाहिं सबै फल आपने भाग को पावैं ।
जो 'हरिचंद' भई सो भई अब प्रान चले चहैं तासों सुनावैं।
प्यारे जू है जग की यह रीति बिदा की समै सब कंठ लगावैं | 3।।

1. उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक एवं कवि का नाम लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- व्याख्या हे प्रिय! यदि आज तक हम लोग नहीं मिल सके तो क्या हुआ, मैं तो सब प्रकार से तुन्हारी ही कही जाती हूं। मुझे आपसे न कोई शिकायत है और न मैं आपको उपालम्भ ही दे रही हूं, क्योंकि में जानती हूं कि इस संसार में सभी लोगों को भाग्य के अनुसार ही फल मिलता है। मेरा दुर्भाग्य है जो जीते जी मेरा आपसे मिलन न हो सका। इसमें आपका क्या दोष, यह तो मेरे भाग्य का दोष है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कहते हैं कि नायिका कहने लगी कि हे प्रिय जो हुआ सो हुआ, अब तो मेरे प्राण इस संसार से विदा लेना चाहते हैं, इसलिए मैं आपसे अनुरोध करती हूं कि इस विदा वेला में प्रयाण के अवसर पर आप मुझे अपने गले से लगा लें, क्योंकि संसार की यह रीति है कि विदाई के अवसर पर अपने प्रियजनों को गले से लगाया जाता है।

3. इस पद्यांश में नायिका के किस दशा का चित्रण किया गया है?

उत्तर- अपने प्रियतम के प्रति असीम प्रेम प्रदर्शित हुआ है तथा नायिका की विरह दशा का वर्णन हुआ है।

4. रस श्रृंगार छंद सवैया भाषा ब्रज अलंकार अनुप्रास।

व्यापक ब्रह्म सबै थल पूरन हैं हमहूँ पहचानती हैं।
पै बिना नँदलाल बिहाल सदा 'हरिचन्द' न ज्ञानहिं ठानती हैं।
तुम ऊधौ यहै कहियो उनसों हम और कछू नहिं जानती हैं।
<u>पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना अखियाँ दुखियाँ नहिं मानती हैं ।। 4 ।।</u>

1. उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक एवं कवि का नाम लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- व्याख्या हे उद्धव ! तुमने हमें बताया कि ब्रह्म तो सर्वव्यापक है, इसे हम भी जानती हैं, किन्तु हम इस ज्ञान को अपने मन में इसलिए धारण करने में असमर्थ हैं, क्योंकि प्रियतम श्रीकृष्ण के वियोग में हमारा मन बेचैन है। जब तक मन अशान्त है, तब तक कोई भी बात भला हमें कैसे समझ में आ सकती है इसलिए पहले तो तुम कोई ऐसा उपाय करो जिससे हमारा मन शान्त हो सके, तभी तुम्हारे ज्ञानोपदेश को धारण करने की स्थिति बन पाएगी।

हे उद्धव ! तुम तो उन श्रीकृष्ण से जाकर यही कहना कि हम गोपियां और कुछ नहीं जानतीं, बस एकमात्र उनका दर्शन करना चाहती हैं, क्योंकि प्रियतम को देखे बिना ये दुखिया आंखें और किसी प्रकार से सन्तुष्ट नहीं हो सकतीं। आप किसी और उपाय से इन आंखों को बहला नहीं सकते, अतः श्रीकृष्ण को अपने दर्शन देकर इन आंखों की हठ पूरी करनी ही पड़ेगी।

3. इस पद्यांश में कवि ने ब्रह्म के किस स्वरूप को महत्ता दी है?

उत्तर- ब्रह्म के सर्वव्यापक स्वरूप को महत्ता दी है।

4. गोपियाँ उद्धव से क्या कहती हैं?

उत्तर- गोपियां उद्धव से कहती हैं कि जाकर श्री कृष्ण से कह देना कि हम और कुछ नहीं जानती हैं बस हमारी आंखें श्री कृष्ण के दर्शनों के अतिरिक्त और कुछ स्वीकार नहीं कर रही हैं।

5. इस पद्यांश में कौन-सा रस है?

उत्तर- वियोग श्रृंगार

6. गोपियाँ व्यापक ब्रह्मा को किस रूप में मानती हैं?

उत्तर- सर्व व्यापक रूप में मानती है।

7. गोपियाँ सदैव किसके बिना 'बिहाल' रहती हैं?

उत्तर- श्री कृष्ण के बिना।

8. गोपियाँ भली प्रकार किसके विषय में जानती हैं?

उत्तर- सर्व व्यापक ब्रह्म के विषय में।

9. सर्वव्यापक कौन हैं?

उत्तर- सर्व व्यापक ब्रह्म है।

10. किसको छोड़कर किसे ज्ञान चर्चा रुचिकर नहीं लगती?

उत्तर- श्री कृष्ण को छोड़कर गोपियों को ज्ञान चर्चा रुचिकर नहीं लगती

11. गोपियों की दुःखियां आँखें क्या स्वीकार नहीं करती?

उत्तर- गोपियों की दुखी आंखें श्री कृष्ण के दर्शन के बिना और कुछ स्वीकार नहीं करती।

12. रस- श्रृंगार छंद -सवैया भाषा -ब्रज अलंकार - अनुप्रास।